आदरणीय प्रधानाचार्य, उप प्रधानाचार्य, मेरे साथीयों और प्रिय छात्रों आप सभी का आज के इस कार्यक्रम में स्वागत है।

इस विद्यालय का भूतपूर्व छात्र होने के नाते और वर्तमान समय में एक पत्रकार होने के नाते, मुझे अपने आदरणीय प्रधानाचार्य महोदय से आज यह अवसर मिला की आज के इस खास कार्यक्रम में, मैं आप सबके सामने हमारे देश के महानतम प्रधानमंत्रियों में से एक और देश के विकास के लिए कई महत्वपूर्ण फैसले लेने वाले लाल बहादुर शास्त्री को लेकर अपने विचार व्यक्त कर सकू।

आप सब सोच रहे होंगे कि मैं वर्तमान में मीडिया में उनके मृत्यु से जुड़े हो रहे चर्चा पर अपना पक्ष रखुगां, लेकिन ऐसा नही है मैं यहा इनगलतफहमीयों पर चर्चा करने नही आया हुं, बल्कि इस अवसर का उपयोग मैं उनके विशाल व्यक्तित्व और उपलब्धियों और एक राजनेता होने के बावजूद उनके सादगी भरे जीवन पर चर्चा करने आया हुं।

उनके सादगी के ऐसे कई किस्से है जिनके बारे में चर्चा की जा सकती है। इन्हीं में से एक के विषय में मैं आपको बताता हुं। यह वाक्य तब का है जब शास्त्री जी देश के प्रधानमंत्री बने थे, उनके प्रधानमंत्री बनने के बाद उनके घर वाले उनसे एक कार लेने के लिए कह रहे थे। इस विषय में उन्होंने अपने सेक्रेटरी को बताया और उनसे फिएट कार का दाम पता करने के लिए कहा। उस कार की कीमत 12000 हजार रूपये थी, लेकिन शास्त्री जी के पास बैंक खाते में मात्र 7000 रूपये थे।

जिससे उन्होंने सरकारी फंण्ड से पैसे लेने के बजाय पंजाब नेशनल बैंक से 5000 रूपयें के लोन का आवेदन किया। जो कि मात्र दो घंटे में पास हो गया, इस बात से हैरान शास्त्री जी ने लोन अधिकारी को अपने कार्यलय में बुलाया और उससे पुछा कि क्या अन्य लोगों का लोन भी इतनी शीघ्रता से ही पास होता है और उन्होंने अधिकारी को इस बात की सलाह दी कि वह उन्हें बैंक के पूरे नियमों के विषय में बताए। तो इस घटना से आप अंदाजा लगा सकते हैं कि शास्त्री जी कितने विनम्रशील और ईमानदार व्यक्ति थे।

यह उनके ईमानदार और सादगीपूर्ण चरित्र का ही नतीजा था, जो उनके शासनकाल में 1965 भारत-पाक युद्ध में ना सिर्फ भारत को विजय प्राप्त हुई बल्कि वह समझौते द्वारा इस युद्ध का समाधान करने में भी सफल रहे। अपने बुद्धि और नेतृत्व क्षमता के कारण वह देश को कई कठिन परिस्थितियों से निकालने में भी कामयाब रहे। वह सदैव ही जवाहर लाल नेहरू के प्रशंसक रहे और उनका मानना था कि हमारा देश तेजी से औद्योगिकरण करके ही गरीबी और बेरोजगारी से मुक्ति पा सकता हैं। उनका मानना था कि विदेशी आयात के जगह, अपने देश को सही तरीके से स्वावलम्बित करना तरक्की के लिए अधिक कारगर विकल्प है।

हम कह सकते हैं कि शास्त्री जी राजनैतिक और आर्थिक मामलों में अपने समय से कही आगे की सोच रखने वाले में से एक थे। उन्होंने देश में तरक्की और खुशहाली लाने के लिए अन्य देशो के साथ शांति समझौते और विदेश निती को बेहतर करने का प्रयास किया। उनके इन्हीं कार्यों ने देश को तरक्की के राह पर आगे बढ़ाने का कार्य किया।

वह सन् 1966 का दुखद वर्ष था, जब भारत-पाक युद्ध के बाद ताशकंद समझौते के बाद भारत माता के सपूत लाल बहादुर शास्त्री की मृत्यु हो गयी थी। यह समझौता इस लिए था कि दोनो देशो के बीच होने वाले युद्धो को रोका जा सके, पर शास्त्री जी भारत के विजय के बाद भी इस समझौते का सदमा ना झेल सके और 11 जनवरी 1966 को ताशकंद में उनकी मृत्यु हो गयी।

अब मैं आप सबसे अपने इस भाषण को समाप्त करने की अनुमति चाहुंगा और मैं यह आशा करता हुं कि मेरे इस भाषण ने आप सबको प्रभावित किया हो तथा आप पर सकरात्मक प्रभाव डाला हो। जिससे की आपको विकास और उन्नति के मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा मिले।

मेरे इस भाषण को इतने धैर्यपूर्वक सुनने के लिए आप सबका धन्यवाद!